पारम्परिक पशुचिकित्सा एवं वैकल्पिक चिकित्सा अध्ययन केन्द्र :

एक परिचय

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर-334001 (राजस्थान)

पुरानी पद्धति एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में तथा एक समूह से दूसरे समूह में भिन्न हो सकती है।

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति के लाभः

1. इस पद्धति में न्यूनतम शुल्क संभव है।
2. ये दवाइयां व अधिक प्रभावी रूप से कार्य करती हैं।
3. ये दवाइयां आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।
4. ये दवाइयां रोग का स्थाई रूप से उपचार करती है।
5. ये दवाइयां परम्परागत ज्ञान को आज के युग से जोड़ने में योगदान देती हैं।
6. पशुपालक इन पर स्वाभाविक रूप से विश्वास करते है क्योंकि वे स्वयं इसे लम्बे समय से उपयोग में लेते आ रहे हैं।
7. पशुपालक केवल बीमारी के अन्तिम चरण में ही पशुओं को अस्पताल में लेकर आते है क्योंकि अस्पताल गावों से दूर है या वे दवाईयों का खर्च नहीं उठा पाते हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि वे अपने आस–पास उपलब्ध संसाधनों के औषधीय गुणों को समझकर समय रहते इलाज के लिए उपयोग करें तो नुकसान को कम किया जा सकता है।
8. ये दवाइयां प्राकृतिक रूप से लाभकारी होती हैं तथा इनसे मांस उत्पादन हेतु पाले जाने वाले पशुओं में रसायनिक अवशेषों के दुष्प्रभाव की समस्या नहीं रहती है।
9. आधुनिक रासायनिक दवाइयों की तुलना में ये प्राकृतिक औषधियां कहीं अधिक निरापद रहती है।

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति के तत्व :

परम्परागत व वैकल्पिक पशुचिकित्सा पद्धति का अर्थ न केवल जड़ी बूटियों का प्रयोग करना है बल्कि इन सभी तकनीकों व धारणाओं को शामिल करना है जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे है। इस पद्धति के कुछ मुख्य तत्व हैः

1. लोक प्रथायें : टूटी हड्डियों को जोड़ना, रोगों के अनुसार प्रबन्धन आदि।
2. धारणायें।
3. पशुओं के आवासीय क्षेत्र के अनुसार उपकरण व तकनीक।
4. मानव संसाधन।
5. जानकारियां : बीमारियों के लक्षण, मौसमी बीमारियां व चारागाह के विषय में जानकारियां ।

इस पशुचिकित्सा प्रणाली को पुर्नजीवित कर वर्तमान पशुचिकित्सीय व्यवस्था को बल प्रदान करने का कार्य हमारे राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर ने उठाया है और इस कार्य को पूर्ण करने के लिए परम्परागत पशुचिकित्सा पद्धति और वैकल्पिक औषधि अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है। यह केन्द्र पशुपालक भाईयों के पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य व उत्पादन हेतु पारम्परिक चिकित्सा द्वारा निरन्तर प्रगति के लिए सदैव प्रयत्नशील है।

केन्द्र के उद्देश्य:

- ❖ औषधीय पौधों को पहचान कर उनको अलग कर एकत्र करना।
- ❖ पौधों व उनके सक्रिय संघटको को औषधीय गुणों के सन्दर्भ में पहचानना।
- ❖ चयनित पौधों के चूर्ण, रस, सत्व और आसव की रोगाणुरोधी और कवक–रोधी गतिविधियों के लिए परीक्षण करना।
- ❖ पारम्परिक औषधीय गुणों वाले फार्मूलों को तैयार कर उनकी रिपोर्ट प्रस्तुत करना तथा इस प्रणाली को उपयोग करने के ऐसे विशिष्ट तरीके विकसित करना जिनमें ये अत्यधिक प्रभावी है।
- ❖ पशु स्वास्थ्य व उत्पादकता के संदर्भ लाभकारी पौधों से प्राप्त औषधिय गुणों वाले द्वितीय उपापचयकों के विषय में शोध कर अधिक चिकित्सीय जानकारी प्राप्त करना।

- ❖ विभिन्न पौधों और उनके औषधियों गुणों वाले घटकों/तत्वों की पहचान करना तथा उनमें मौजूद औषधीय गुणों का वैज्ञानिक पुष्टिकरण व पशुप्रयोगों अथवा चिकित्सीय परीक्षण पशु चिकित्सालयों या स्थानीय पशुओं में करना।
- ❖ पौधों में मौजूदा औषधीय गुणों को स्थापित करना। पशुओं में इन दवाईयों की चिकित्सीय मात्रा (खुराक) निर्धारित करना। प्रयोगशाला से प्राप्त जानकारी का स्थानीय पशुओं पर प्रमाणीकरण करना।

केन्द्र द्वारा किया गया कार्य :

1. परम्परागत पशुचिकित्सा प्रणाली को लिखित रूप से संग्रहित करना एवं उनका वैज्ञानिक पुष्टिकरण प्रयोगशाला में करना।
2. पौधों में उपस्थित सक्रिय संघटकों को पहचानना व इनके विशिष्ट औषधीय गुणों को जानना।
3. पौधों में उपलब्ध सक्रिय संघटकों को निकालना/उद्धरण करना व विभिन्न परीक्षणों द्वारा इन्हें प्रमाणित करना।
4. रोग निरोधक क्षमता व चिकित्सीय क्षमता वाली दवाईयां बनाने के लिए सक्रिय संघटकों की मात्रा निर्धारित करना।
5. परम्परागत पशुचिकित्सीय औषधियों को विभिन्न संयोजनों में प्रयोग कर उनकी चिकित्सीय क्षमता को और अधिक बेहतर बनाना।
6. परम्परागत औषधियों के आधार पर नई दवाईयां बनाना।

प्राचीनकाल से ही यह प्रणाली हमारे पूर्वजों द्वारा अपने पालतू जानवरों के इलाज के लिए अपनाई जा रही है। परन्तु स्वतंत्रता के बाद से हमारा सारा ध्यान केवल आधुनिक/ रसायनिक/पश्चिमी चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने में ही लगा रहा। यही कारण है कि हम इस प्रणाली पर पूरी तरह निर्भर हो चुके हैं। आज भी पशुचिकित्सा का क्षेत्र दवाईयों की और संसाधनों की कमी से जूझ रहा है। इस कमी को पूरा करने के उद्देश्य से राजुवास, बीकानेर में पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति और वैकल्पिक दवाई केन्द्र की स्थापना की गयी है जो कि वर्तमान में प्रचलित पशु चिकित्सा प्रणाली को और अधिक मजबूत तथा सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति और वैकल्पिक दवाईयों का अभिप्राय उस ज्ञान से जो पशुचिकित्सा महाविद्यालयों में पढ़ाये जा रहे ज्ञान से भिन्न है और पशुपालकों द्वारा प्राचीन समय से उपयोग में लाया जा रहा है। यह पद्धति वैदिक काल से परम्परागत रूप में किसानों, पशुपालकों के अनुभवों से मौखिक और प्रायोगिक रूप में पीढियों से चली आ रही है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशों में रहने वाले 80 प्रतिशत से अधिक लोग पशुओं में बीमारियों के इलाज व उनकी रोकथाम के लिए देशी उपचार पद्धति पर निर्भर रहते है। इन परम्परागत चिकित्सीय पद्धति को इथ्नो वेटरीनरी मेडिसिन (EVM) कहते है। ये पारम्परिक दवाइयां सस्ती, सुलभ व प्रभावशाली तो हैं ही, साथ ही आसानी से इन्हें पशुपालक अपने स्तर पर बना भी सकता है। ये सदियों

देश में सबसे अधिक पशु सम्पदा राजस्थान में पायी जाती है। राजस्थान में भिन्न भिन्न प्रकार की पारम्परिक पशु चिकित्सा पद्धति आज भी प्रचलित है। यह पद्धति जाति समूह के हिसाब से बदलती रहती है। इस पारम्परिक पद्धति का नई चिकित्सा प्रणाली से संयोग करके और वैज्ञानिक पुष्टिकरण करके उसे जन सामान्य तक पहुंचाना ही हमारे केन्द्र का उद्देश्य है।

इस पद्धति के उपयोग से न केवल हमारी निर्भरता रसायनिक दवाईयों पर कम होगी बल्कि हमारे पारम्परिक ज्ञान को वैज्ञानिक तरीके से सहेजने में भी सहायता मिलेगी।

रसायनिक दवाईयों के इस युग में आज भी दुनिया भर के कई पशुपालक भाई परम्परागत पशुचिकित्सा पद्धति पर निर्भर रहते हैं। पशुओं को स्वस्थ बनाये रखने के लिए देशी व सुलभ तरीकों का उपयोग कर, जैसे कि जड़ी बूटियों का उपयोग, आसान ईलाज प्रक्रिया व पशु प्रबन्धन प्रणाली से पशुओं में होने वाली बीमारियों की रोकथाम और उनका उपचार किया जा सकता है।

परम्परागत पशुचिकित्सा प्रणाली रसायनिक दवाओं का अच्छा विकल्प है। यह पश्चिमी पशुचिकित्सा प्रणाली के विकल्प के रूप में कार्य कर सकती है। आज भी दूर दराज के इलाकों में आधुनिक पशुचिकित्सा प्रणाली सुलभ नहीं है। इस खाई को पाटने में यह प्रणाली अत्यन्त कारगर सिद्ध होगी। यह प्रणाली विकास कार्यों को जमीनी स्तर पर पहुंचाने में मददगार सिद्ध होगी। इसके द्वारा हम आम लोगों को उनके पारम्परिक ज्ञान व आस–पास के संसाधनों से सशक्त बनाने में सफल होंगे।

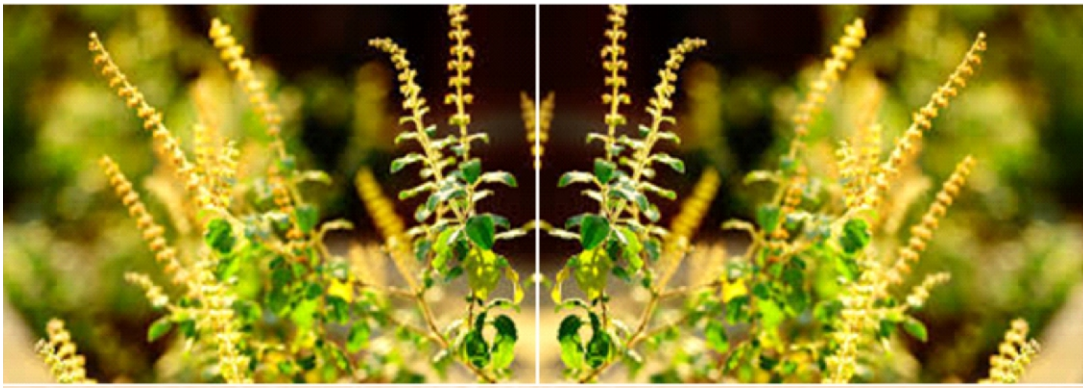

कार्य योजना :

औषधीय पौधों पर उपलब्ध साहित्य की जांच कर प्रारम्भिक जानकारी एकत्र करना। शुष्क क्षेत्र के पेड़ एवं पौधों में औषधीय गुणों वाले सक्रिय संघटकों का उनके रोगाणुरोधी क्षमता के लिए परीक्षण करना।

औषधीय पौधों का आस–पास के और स्थानीय क्षेत्रों में सर्वेक्षण कर उनके विभिन्न भागों (जैसे पत्तियां, छाल, तना और जड़ों आदि) अथवा पूरे पौधे को एकत्र करना।

सक्रिय संघटकों को प्राप्त करने के लिए पौधों के चयनित भाग को पानी में या एल्कोहल में उद्दरण करना/सत्व बनाना इसके बाद तैयार सत्व/अर्क को विभिन्न जैविक परीक्षणों से गुजारने के बाद उनकी रोगाणुरोधी क्षमता व औषधीय गुणों की उपस्थिति की जाँच करना। प्रयोगशाला से प्राप्त जानकारी का स्थानीय क्षेत्र के पशुओं पर परीक्षण करना। सत्व/अर्क से उपयोग के लिये तैयार फार्मूले/दवाईयों का निर्माण करना जिसे पशुपालक भाई रोग निरोधी, चिकित्सीय अथवा आहार के अनुपूरक गुणों के लिए उनका पशुओं में प्रयोग कर सकें।

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभारः

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा

निदेशक प्रसार शिक्षा

राजुवास, बीकानेर

-:: सम्पर्क सूत्र ::-

प्रो. (डॉ.) ए. पी. सिंह

प्रमुख अन्वेषक

9414139188

डॉ. अशोक गौड़

सहायक आचार्य

9461906288

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र, बीकानेर-334001(राज.)

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर मो. : 9784105819